(मुद्रित पृष्ठों की संख्या = तेरह)

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

कक्षा - आठ विषय - हिन्दी

वसंत भाग-3

पाठ14 - अकबरी लोटा

मौड्यूल - 2

प्रस्तुतकर्त्री

मंजू देवी, प्र. स्ना. अ.-वरि.मान(हिन्दी व संस्कृत)

लेखक परिचय

अन्नपूर्णानंद जी का जन्म 2 सितंबर 1895 को तथा उनका देहावसान 4 दिसंबर 1962 में हुआ था। ये हिंदी के हास्य लेखक थे। विख्यात मनीषी तथा राजनेता डॉ॰सम्पूर्णानन्द के आप छोटे भाई थे। इनकी पढ़ाई उत्तर प्रदेश के गाजीपुर के एक छोटे स्कूल से आरंभ हुई और

मोतीलाल नेहरू के पत्र 'इंडिपेंडेंट' में कुछ समय श्रीप्रकाश के साथ इन्होंने काम किया।

पाठ का सारांश

पंडित अन्नपूर्णानद जी ने इस कहानी में बताया है कि लाला झाऊलाल नामक व्यक्ति बहुत अमीर नहीं है। पर उन्हें गरीब भी नहीं कहा जा सकता। पत्नी के द्वारा ढाई सौ रूपए माँगने तथा अपने मायके से लेने की बात पर अपनी इज्जत के लिए सात दिन में रुपये देने की बात की।

पाँच दिन बीतने पर अपने मित्र बिलवासी को यह घटना सुना कर पैसे की इच्छा रखी पर उस समय उनके पास रूपए न थे। बिलवासी जी ने उसके अगले दिन आने का वादा किया जब वह समय पर न पहुँचे तो झाऊलाल चिंता में छत पर टहलते हुए पानी माँगने लगे। पत्नी द्वारा लाये हुए नापसंद लोटे से पानी पीते हुए लोटा नीचे एक अंग्रेज पर गिर गया।

अंग्रेज एक लंबी चौड़ी भीड़ सहित आँगन में घुस गया और लोटे के मालिक को गाली देने लगा। बिलवासी जी ने बड़ी चतुराई से अंग्रेज को ही मूर्ख बनाकर उसी लोटे को अकबरी लोटा बताकर उसे 500 रूपए में बेच दिया। इससे रुपये का इंतजाम भी हो गया और झाऊलाल की इज्जत भी बच गई। इससे लाला बहुत प्रसन्न हुए उसने बिलवासी जी को बहुत धन्यवाद दिया।

"मेरी समझ में 'ही इज ए डेंजरस ल्यूनाटिक' (यानी, यह खतरनाक पागल है)।"

"नहीं, मेरी समझ में 'ही इज ए डेंजरस क्रिमिनल' (नहीं, यह खतरनाक मुजरिम है)।"

परमात्मा ने लाला झाऊलाल की आँखों को इस समय कहीं देखने के साथ खाने की भी शक्ति दे दी होती तो यह निश्चय है कि अब तक बिलवासी जी को वे अपनी आँखों से खा चुके होते। वे कुछ समझ नहीं पाते थे कि बिलवासी जी को इस समय क्या हो गया है।

साहब ने बिलवासी जी से पूछा "तो क्या करना चाहिए?"

"पुलिस में इस मामले की रिपोर्ट कर दीजिए जिससे यह आदमी फौरन हिरासत में ले लिया जाए।"

"पुलिस स्टेशन है कहाँ?"

"पास ही है, चलिए मैं बताऊँ"

"चलिए।"

"अभी चला। आपकी इजाज़त हो तो पहले मैं इस लोटे को इस आदमी से खरीद लूँ। क्यों जी बेचोगे? मैं पचास रुपये तक इसके दाम दे सकता हूँ।"

लाला झाऊलाल तो चुप रहे पर साहब ने पूछा–"इस रद्दी लोटे के आप पचास रुपये क्यों दे रहे हैं?"

"आप इस लोटे को रद्दी बताते हैं? आश्चर्य! मैं तो आपको एक विज्ञ और सुशिक्षित आदमी समझता था।"

"आखिर बात क्या है, कुछ बताइए भी।"

"जनाब यह एक ऐतिहासिक लोटा जान पड़ता है। जान क्या पड़ता है, मुझे पूरा विश्वास है। यह वह प्रसिद्ध अकबरी लोटा है जिसकी तलाश में संसार-भर के म्यूज़ियम परेशान हैं।"

"यह बात?"

"जी, जनाब। सोलहवीं शताब्दी की बात है। बादशाह हुमायूँ शेरशाह से हारकर भागा था और सिंध के रेगिस्तान में मारा-मारा फिर रहा था। एक अवसर पर प्यास से उसकी जान निकल रही थी। उस समय एक ब्राह्मण ने इसी लोटे से पानी पिलाकर उसकी जान बचाई थी। हुमायूँ के बाद अकबर ने उस ब्राह्मण का पता लगाकर उससे इस लोटे को ले लिया और इसके बदले में उसे इसी प्रकार के दस सोने के लोटे प्रदान किए। यह लोटा सम्राट अकबर को बहुत प्यारा था। इसी से इसका नाम अकबरी लोटा पड़ा। वह बराबर इसी से वजू करता था। सन् 57 तक इसके शाही घराने में रहने का पता है। पर इसके बाद लापता हो गया। कलकत्ता के म्यूज़ियम में इसका प्लास्टर का मॉडल रखा हुआ है। पता नहीं यह लोटा इस आदमी के पास कैसे आया? म्यूज़ियम वालों को पता चले तो फैंसी दाम देकर खरीद ले जाएँ।

इस विवरण को सुनते-सुनते साहब की आँखों पर लोभ और आश्चर्य का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे कौड़ी के आकार से बढ़कर पकौड़ी के आकार की हो गईं। उसने बिलवासी जी से पूछा–"तो आप इस लोटे का क्या करिएगा?"

"मुझे पुरानी और ऐतिहासिक चीज़ों के संग्रह का शौक है।"

"मुझे भी पुरानी और ऐतिहासिक चीज़ों के संग्रह करने का शौक है। जिस समय यह लोटा मेरे ऊपर गिरा था, उस समय मैं यही कर रहा था। उस दुकान से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियाँ खरीद रहा था।"

"जो कुछ हो, लोटा मैं ही खरीदूँगा।"

"वाह, आप कैसे खरीदेंगे, मैं खरीदूँगा, यह मेरा हक है।"

"हक है?"

"ज़रूर हक है। यह बताइए कि उस लोटे के पानी से आपने स्नान किया या मैंने?"

"आपने।"

"वह आपके पैरों पर गिरा या मेरे?"

"आपके।"

"अँगूठा उसने आपका भुरता किया या मेरा?"

"आपका।"

"इसलिए उसे खरीदने का हक मेरा है।"

"यह सब बकवास है। दाम लगाइए, जो अधिक दे, वह ले जाए।"

"यही सही। आप इसका पचास रुपया लगा रहे थे, मैं सौ देता हूँ।"

"मैं डेढ़ सौ देता हूँ।"

"मैं दो सौ देता हूँ।"

"अजी मैं ढाई सौ देता हूँ।" यह कहकर बिलवासी जी ने ढाई सौ के नोट लाला झाऊलाल के आगे फेंक दिए।

साहब को भी ताव आ गया। उसने कहा–"आप ढाई सौ देते हैं, तो मैं पाँच सौ देता हूँ। अब चलिए।"

बिलवासी जी अफ़सोस के साथ अपने रुपये उठाने लगे, मानो अपनी आशाओं की लाश उठा रहे हों। साहब की ओर देखकर उन्होंने कहा–"लोटा आपका हुआ, ले जाइए, मेरे पास ढाई सौ से अधिक नहीं हैं।"

यह सुनना था कि साहब के चेहरे पर प्रसन्नता की कूँची गिर गई। उसने झपटकर लोटा लिया और बोला–"अब मैं हँसता हुआ अपने देश लौटूँगा। मेजर डगलस की डींग सुनते-सुनते मेरे कान पक गए थे।"

"मेजर डगलस कौन हैं?"

"मेजर डगलस मेरे पड़ोसी हैं। पुरानी चीज़ों के संग्रह करने में मेरी उनकी होड़ रहती है। गत वर्ष वे हिंदुस्तान आए थे और यहाँ से जहाँगीरी अंडा ले गए थे।"

"जहाँगीरी अंडा?"

"हाँ, जहाँगीरी अंडा। मेजर डगलस ने समझ रखा था कि हिंदुस्तान से वे ही अच्छी चीज़ें ले सकते हैं।"

"पर जहाँगीरी अंडा है क्या?"

"आप जानते होंगे कि एक कबूतर ने नूरजहाँ से जहाँगीर का प्रेम कराया था। जहाँगीर के पूछने पर कि, मेरा एक कबूतर तुमने कैसे उड़ जाने दिया, नूरजहाँ ने उसके दूसरे कबूतर को उड़ाकर बताया था, कि ऐसे। उसके इस भोलेपन पर जहाँगीर दिलोजान से निछावर हो गया। उसी क्षण से उसने अपने को नूरजहाँ के हाथ कर दिया। कबूतर का यह अहसान वह नहीं भूला। उसके एक अंडे को बड़े जतन से रख छोड़ा। एक बिल्लोर की हाँडी में वह उसके सामने टँगा रहता था। बाद में वही अंडा "जहाँगीरी अंडा" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी को मेजर डगलस ने पारसाल दिल्ली में एक मुसलमान सज्जन से तीन सौ रुपये में खरीदा।"

"यह बात?"

"हाँ, पर अब मेरे आगे दून की नहीं ले सकते। मेरा अकबरी लोटा उनके जहाँगीरी अंडे से भी एक पुश्त पुराना है।"

"इस रिश्ते से तो आपका लोटा उस अंडे का बाप हुआ।"

साहब ने लाला झाऊलाल को पाँच सौ रुपये देकर अपनी राह ली। लाला झाऊलाल का चेहरा इस समय देखते बनता था। जान पड़ता था कि मुँह पर छह दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी का एक-एक बाल मारे प्रसन्नता के लहरा रहा

है। उन्होंने पूछा–"बिलवासी जी! मेरे लिए ढाई सौ रुपया घर से लेकर आए! पर आपके पास तो थे नहीं।"

"इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए, मैं नहीं बताऊँगा।"

"पर आप चले कहाँ? अभी मुझे आपसे काम है दो घंटे तक।"

"दो घंटे तक?"

"हाँ, और क्या, अभी मैं आपकी पीठ ठोककर शाबाशी दूँगा, एक घंटा इसमें लगेगा। फिर गले लगाकर धन्यवाद दूँगा, एक घंटा इसमें भी लग जाएगा।"

"अच्छा पहले पाँच सौ रुपये गिनकर सहेज लीजिए।"

"रुपया अगर अपना हो, तो उसे सहेजना एक ऐसा सुखद मनमोहक कार्य है कि मनुष्य उस समय सहज में ही तन्मयता प्राप्त कर लेता है। लाला झाऊलाल ने अपना कार्य समाप्त करके ऊपर देखा। पर बिलवासी जी इस बीच अंतर्धान हो गए।"

उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई। वे चादर लपेटे चारपाई पर पड़े रहे। एक बजे वे उठे। धीरे, बहुत धीरे से अपनी सोई हुई पत्नी के गले से उन्होंने सोने की वह सिकड़ी निकाली जिसमें एक ताली बँधी हुई थी। फिर उसके कमरे में जाकर उन्होंने उस ताली से संदूक खोला। उसमें ढाई सौ के नोट ज्यों-के-त्यों रखकर उन्होंने उसे बंद कर दिया। फिर दबे पाँव लौटकर ताली को उन्होंने पूर्ववत अपनी पत्नी के गले में डाल दिया। इसके बाद उन्होंने हँसकर अँगड़ाई ली। दूसरे दिन सुबह आठ बजे तक चैन की नींद सोए।

-अन्नपूर्णानंद वर्मा

प्रश्न-अभ्यास

कहानी की बात

1. "लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे।"

   लाला झाऊलाल को बेढंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया। आपके विचार से वे चुप क्यों रहे? अपने विचार लिखिए।

2. "लाला झाऊलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।"

   आपके विचार से लाला झाऊलाल ने कौन-कौन सी बातें समझ ली होंगी?

3. अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने तक से क्यों इनकार कर दिया था? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे? स्पष्ट कीजिए।

4. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था? लिखिए।

5. आपके विचार से अंग्रेज़ ने यह पुराना लोटा क्यों खरीद लिया? आपस में चर्चा करके वास्तविक कारण की खोज कीजिए और लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. "इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए। मैं नहीं बताऊँगा।"

   बिलवासी जी ने यह बात किससे और क्यों कही? लिखिए।

2. "उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई।"

   समस्या झाऊलाल की थी और नींद बिलवासी की उड़ी तो क्यों? लिखिए।

3. "लेकिन मुझे इसी जिंदगी में चाहिए।"

   "अजी इसी सप्ताह में ले लेना।"

   "सप्ताह से आपका तात्पर्य सात दिन से है या सात वर्ष से?"

शब्द - अर्थ

करीब - लगभग

दशा - हालत

प्रतिष्ठा - इज्जत

साख - विश्वास

संयोग - भाग्य से

अदब - मान देना

मुँडेर - छत का किनारा

आकर्षण - खिंचाव

शख्स - आदमी

डेंजरस - खतरनाक

हिरासत - कैद

रद्दी - बेकार

कोश - खजाना

सनसनाया - घबराहट

प्रबंध - इंतजाम

सुशिक्षित - पढ़ा लिखा

विपदा - कठिनाई

गढ़न - बनावट

जतन - प्रयत्न

खुरापाती - शरारती

प्रकांड - श्रेष्ठ

निरीह - कमजोर

क्रिमिनल - मुजरिम

इजाजत - आज्ञा

विज्ञ - बुद्धिमान

गनीमत - सन्तोष करने योग्य

प्रश्न – उत्तर (कहानी की बात)

प्रश्न 3: अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने तक से क्यों इनकार कर दिया था? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने से इसलिए इनकार कर दिया क्योंकि अंग्रेज़ का क्रोध शांत हो जाए और अंग्रेज़ को ज़रा भी संदेह न हो कि वह लाला झाऊलाल का आदमी है। वह अपनी योजना पूरी करना चाहते थे जिससे पैसे की व्यवस्था हो सके।

प्रश्न 4: बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था? लिखिए।

उत्तर: बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपने ही घर से अपनी पत्नी के संदूक से चोरी कर किया था।

प्रश्न 5: आपके विचार से अंग्रेज ने यह पुराना लोटा क्यों खरीद लिया? आपस में चर्चा करके वास्तविक कारण की खोज कीजिए और लिखिए।

उत्तर: अंग्रेज़ को पुरानी ऐतिहासिक चीज़ें इकट्ठा करने का शौक था। ऐसा इसलिए कह सकते है क्योंकि वह दुकान से पुरानी पीतल की मूर्तियाँ खरीद रहा था। अंग्रेज़ ने बिलवासी के कहने पर उस लोटा को "अकबरी लोटा" समझकर 500 रूपए में खरीदा।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1: "इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए। मैं नहीं बताऊँगा।" बिलवासी जी ने यह बात किससे और क्यों कही? लिखिए।

उत्तर: 'बिलवासी' जी ने यह बात 'लाला झाऊलाल' से कही क्योंकि बिलवासीजी

ने रुपयों का प्रबंध अपने ही घर से अपनी पत्नी के संदूक से चोरी कर किया था इस रहस्य को वह 'झाऊलाल' के सामने खोलना नहीं चाहते थे।

क्या होता यदि

प्रश्न1:क्या होता यदि अंग्रेज़ लोटा न खरीदता?

उत्तर: यदि अंग्रेज़ लोटा नहीं खरीदता तो बिलवासी जी को अपनी पत्नी की संदूक से चुराए हुए रूपए लाला झाऊलाल को देने पड़ते। अन्यथा झाऊलाल अपनी पत्नी को पैसे नहीं दे पाते और अपनी पत्नी के सामने बेइज्जत होते।

प्रश्न 2: क्या होता यदि अंग्रेज़ पुलिस को बुला लेता?

उत्तर: यदि अंग्रेज़ पुलिस को बुला लेता तो सम्भव था कि लाला झाऊलाल को गिरफ्तार कर लिया जाता याउन्हें जुर्माना देना पड़ता।

प्रश्न 3: क्या होता यदि जब बिलवासी अपनी पत्नी के गले से चाबी निकाल रहे थे, तभी उनकी पत्नी जाग जाती?

उत्तर: गले से चाबी निकालते समय यदि बिलवासी जी की पत्नी जग जाती तो चोरी जैसा घिनौना काम करने पर उन्हें अपनी पत्नी के समक्ष शर्मिंदा होना पड़ता।

प्रश्न 4: **आपकी राय में** बिलवासी जी ने जिस तरीके से रुपयों का प्रबंध किया, वह सही था या गलत?

भाषा की बात

प्रश्न 1: इस कहानी में लेखक ने जगह-जगह पर सीधी- सी बात कहने के बजाय रोचक मुहावरों , उदाहरणों आदि के द्वारा कहकर अपनी बात को और अधिक मजेदार रोचक बना दिया है। कहानी से वे वाक्य चुनकर लिखिए जो

आपको सबसे अधिक मजेदार लगे।

उत्तर: अब तक बिलवासी जी को वे अपनी आँखों से खा चुके होते।

कुछ ऐसी गढ़न उस लोटे की थी कि उसका बाप डमरू, माँ चिलम रही हो।

ढाई सौ रूपए तो एक साथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते हैं।

प्रश्न 2: इस कहानी में लेखक ने अनेक मुहावरों का प्रयोग किया है। कहानी में से पाँच मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग करते हुए वाक्य लिखिए।

उत्तर::1. चैन की नींद सोना – निश्चिंत होकर सोना -कुख्यात चोर के पकड़े जाने पर पुलिस चैन की नींद सोई।
2. आँखों से खा जाना – क्रोधित होना- मालिक ने नौकर को चोरी करते पकड़कर उसे ऐसे देखा मानो आँखों से ही खा जाएगा।
3. आँख सेंकने के लिए भी न मिलना – दुर्लभ होना- हस्तकला से बनी वस्तुएँ तो आजकल आँख सेंकने के लिए भी नहीं मिलती हैं।
4. मारा मारा फिरना-– ठोकरें खाना - बेटे आलीशान घर में रहते है और बाप बेचारा मारा- मारा फिरता है।
5. डींगे सुनना – झूँठी तारीफ सुनना- लाला जी घर में तो भीगी बिल्ली बनकर रहते हैं परंतु बाहर अपनी बहादुरी की डींगें मारते फ़िरते हैं।

--इति--